E Content for Student of Patliputra University

B.A. (Hons.) Part I Paper I

Subject - Political science

Topic - **Power Approach in Political science**

Dr. Umesh Chandra Shukla
Associate Prof. Political science
R.R.S. college, Hajipur.

आधुनिक राजनीति विज्ञान राजनीति का मूलतत्व 'शक्ति' को मानता है। अब राज्य, सरकार एवं व्यक्ति के अध्ययन जैसे परम्परागत तत्वों के स्थान पर शक्ति के अध्ययन को प्राथमिकता दी जाती है। यह वर्तमान समय के यथार्थ एवं शक्ति तत्व की बढ़ती भूमिका पर आधारित है। कैटलिन ने यही कारण कहा है- Political Science is the science of power. लासवेल ने और स्पष्ट किया है, Political Sciena as an empirical discipline is the study of shaping and sharing of power.

राजनीतिविज्ञान का मौलिकतत्व शक्ति को मानने का व्यवहारिक आधार यह है कि राजनीति में सभी क्रियायें गतिविधियों, संस्थाओं के गठन एवं निर्णय निर्माण की प्रक्रिया, निर्णयों के क्रियान्वयन की प्रक्रिया, दलीय व्यवस्था की गतिविधियां आदि सभी स्थानों पर शक्ति केन्द्रबिन्दु में रहती है। प्रक्रिया चाहे प्रजातांत्रिक हो या तानाशाही, सरकार केन्द्र की हो या किसी राज्य या फिर स्थानीय निकायों की, शक्ति की प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। राजनीति विज्ञान की शक्ति व्यवस्था अध्ययन के इसी आयाम को रेखांकित करता है।

शक्ति की परिभाषा मैकाइवर ने लिखा है, "शक्ति होने से हमारा अर्थ व्यक्तियों या व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित करने, विनियमित करने या निर्देशित करने की क्षमता से है। राबर्ट ए० डॉल ने इसे मानव संबंध की विशेष स्थिति के अनुसार परिभाषित किया है," शक्ति लोगों के पारस्परिक संबंधों की एक

Scanned with CamScanner

ऐसी स्थिति का नाम है, जिसके अन्तर्गत एक पक्ष द्वारा दूसरे पक्ष को प्रभावित का उससे कुछ ऐसे कार्य कराये जा सकते हैं जो उसके द्वारा अन्यथा न किये जाते।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि शक्ति एक बहुआयामी संबंधों से जुड़ा तत्व है। इसमें मनोविज्ञान का भी प्रभाव है क्यों कि शक्तिधारक और जिसपर शक्ति का प्रयोग किया जाता है दोनों के मनोविज्ञान भिन्न होते हैं, जिसका प्रभाव दोनों के संबंधों पर पड़ता है।

शक्ति, प्रभाव एवं सत्ता के अन्तर्संबंधों की व्याख्या भी इस अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए आवश्यक है-

प्रभाव एवं शक्ति -

प्रभाव एवं शक्ति के बीच समानता के तत्व यह है कि दोनों में ही व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित एवं परिवर्तित किया जाता है। यह सच है कि व्यवहार में परिवर्तन करने वाला व्यक्ति भुक्ता होता है तथा प्रभावशाली एवं शक्तिशाली व्यक्ति की भूमिका उससे ऊपर की होती है। प्रभाव शक्ति उत्पन्न करता है तो शक्ति प्रभाव उत्पन्न करता है। कोई व्यक्ति शक्ति के कारण परिवर्तन लाता है या प्रभाव के कारण इसकी व्याख्या कठिन है।

प्रभाव और शक्ति में अन्तर का सबसे बड़ा बिन्दु यह है कि प्रभाव अनुनयात्मक होता है। इसका प्रभाव मनोवैज्ञानिक होता है। प्रभावित व्यक्ति अपनी इच्छा से, भयरहित होकर अपने व्यवहार में परिवर्तन लाता है। इसके विपरीत शक्ति दमनात्मक होती है। इसके पीछे दण्ड का भय होता है। इसमें व्यवहार परिवर्तन करने वाले व्यक्ति के पास भय के कारण कोई विकल्प नहीं रहता है।

प्रभाव का उपयोग प्रभावित व्यक्ति की इच्छा पर निर्भर करता है। प्रभावित व्यक्ति की सहमति आवश्यक होती है शक्ति में प्रायः शक्तिधारक की इच्छा महत्वपूर्ण होता है। शक्तिधारक शक्ति का उपयोग दूसरों की इच्छा के विरुद्ध एवं प्रतिरोध करने पर भी कर सकता है।

प्रभाव प्रजातांत्रिक माना जाता है। इसमें समानता तथा दूसरों की गरिमा को महत्व दिया जाता है। यह मूल्य युक्त है। इसके विपरीत शक्ति दमन एवं भय की पृष्ठभूमि

के कारण अप्रजातांत्रिक माना जाता है।

प्रभाव की शक्ति असीम होती है। एकबार प्रभाव का मार्ग कर लेने के बाद उसका लाभ मिलता रहता है। प्रभावक और प्रभावशाली में सद्भावनापूर्ण संबंध स्थापित हो जाता है। इसके विपरीत शक्ति पर कई सीमाएँ होती हैं। उसे प्रभाव के लाने की आवश्यकता पड़ती है। इसी शक्तिशाली से भी उसे बिता करना होता है। क्योंकि शक्ति प्रतिशक्ति को आमंत्रित करती है।

इस प्रकार शक्ति और प्रभाव में अन्तर स्पष्ट किया जा सकता है। किन्तु ऐसे भी दृष्टांत मिलते हैं कि शक्ति और प्रभाव में अन्तर कर पाना मुश्किल हो जाता है।

शक्ति और सत्ता

शक्ति का उपयोग व्यक्ति या समूह द्वारा दूसरों के विरुद्ध प्रतिरोध के बावजूद किया जा सकता है। यह आदेश देने तथा उसे मनवाने की क्षमता है। यह दूसरे पर थोपा जा सकता है। इसका उपयोग नग्न बलप्रयोग के रूप में भी किया जा सकता है। किन्तु ऐसी शक्ति को जनस्वीकृति प्राप्त नहीं होती है अतः इसके पीछे भय, दमन, लाचारी तथा प्रतिरोध की क्षमता का अभाव होता है।

जब शक्ति की औचित्यपूर्णता समाज में स्थापित हो जाय तब वह शक्ति सत्ता में बदल जाती है। Legitimate power is Authority. शक्ति और सत्ता में यही मौलिक अन्तर है। प्रश्न है कि कोई शक्ति कब सत्ता में बदल जाती है? मैक्स वेबर ने सत्ता के तीन आधारों को बतलाकर इसे स्पष्ट कर दिया है। — कानूनी, परम्परागत, करिश्माकारी

जब कोई व्यक्ति कानूनी आधार पर पद विशेष पर कार्यरत रहने के कारण अपनी शक्ति का उपयोग करता है तो वह कानूनी सत्ता का उपयोग करता है। जब किसी व्यक्ति विशेष में शक्ति का आधार परम्परा हो तो उसे पारम्परिक सत्ता कहते हैं। जैसे ब्रिटेन में राजा का पद परम्परागत आधार पर प्राप्त करना।

Scanned with CamScanner

इसी प्रकार जब कोई व्यक्ति अपने वैयक्तिक गुणों, आदर्शों एवं नेतृत्व के कारण समाज में लोकप्रिय हो, व्यक्ति उसके प्रति भक्ति का भाव हो तथा वह अपने प्रति Hero Worship की स्थिति प्राप्त कर चुका हो, तो उसमें करिश्मावादी सत्ता उत्पन्न हो जाती है।

इस प्रकार शक्ति, प्रभाव एवं सत्ता के बीच के अन्तर को स्पष्ट करते हुए शक्ति का अर्थ स्पष्ट किया जा सकता है।

वर्तमान समय में राजनीति विज्ञान में शक्ति अवधारणा का अध्ययन व्यापक रूप में किया जाता है। इसने राजनीति विज्ञान के अध्ययन को नया आयाम दिया है। लासवेल ने इसी आधार पर अपनी पुस्तक, Power, Who Gets, what, When and How? की रचना की बाद में उन्होंने इसी पुस्तक Power and Society की रचना कर इस अवधारणा को और भी स्पष्ट करने का प्रयास किया। एवं संक्षेप में यह अवधारणा यह स्पष्ट करता है कि राजनीति की समस्त गतिविधियाँ, प्रक्रिया आदेश-निर्देश आदि के केन्द्र में शक्ति, प्रभाव एवं सत्ता ही होगी।